International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2016; Page No. 55-56

हिंदी का वैश्विक स्वरूप

डॉ0 गिरधारी लाल लोधी

सहायक प्राध्यापक, हिंदी (अतिथि, सत्र 2016–17), चन्द्रपाल डड़सेना शासकीय महाविद्यालय पिथौरा, जिला–महासमुंद्र, छत्तीसगढ़, भारत।

सारांश

हिंदी को विश्वभाषा व राष्ट्रसंघ की भाषा बनाने में कठिनाइयां विज्ञान और टेक्नोलॉजी की शब्दावली की है। अभी हमने जो शब्द गढ़े हैं उनमें अस्पष्टता, अस्वाभाविकता और अंग्रेज़ी की छाप है। वे शब्दकोश में तो जगह पा सकते हैं पर बोलचाल में उनका प्रवेश मुश्किल है। टेक्नोलॉजी को जैसे हमने तकनीक जैसे सरल शब्द में बदला, कुछ ऐसे प्रयोग की जरूरत है। अंग्रेज़ी को थोड़ा बदलकर शब्द गढ़ने की जरूरत नहीं है, अलेक्जेंडर की जगह सिकंदर जैसे शब्द सही विकल्प है। इसमें भारतीय भाषाएं हमारे बहुत काम आएंगी। मराठी ने भी ट्रांसफार्मर के लिए रोहित्र जैसे अच्छे प्रयोग किए हैं। यूरापीय भाषाओं की तुलना में उर्दू, फारसी, तुर्की, अरबी शब्द हमारे ज्यादा नजदीक है। अंग्रेज़ी के प्रचलन में आ चुके शब्दों को अपनाने में भी कोई बुराई नहीं है। हमें शुद्धतावादी दृष्टिकोण छोड़ना होगा। विज्ञान व तकनीकी शब्दावली की दुरुहता दूर होते ही हिंदी अपने आप सर्वमान्य हो जाएगी। जरूरत सिर्फ इतनी है कि हम इसे विज्ञान और वाणिज्य की भाषा बनाने की दिशा में सार्थक काम करें और सोचें कि हम हिंदी सीखने के इच्छुक देशों के लिए किस तरह हिंदी संसाधन स्रोत बन सकते हैं।

मूल शब्द: अस्पष्टता, अस्वाभाविकता और अंग्रेज़ी की छाप, विश्व हिंदी सचिवालय

प्रस्तावना

बोलने और समझने वालों की संख्या की दृष्टि से हिंदी विश्व की दूसरी सबसे बड़ी भाषा है। परंतु सर्वेक्षण में हिंदी की अनेक बोलियों जैसे भोजपुरी, अवधी, हरियाणवी, छत्तीसगढ़ी, मैथिली, मगही इत्यादि को स्वतंत्र भाषा मानकर सूचीबद्ध करते हुए, विश्व में सबसे अधिक बोली जानी वाली भाषाओं की सूची में इसे चौथे स्थान पर रखा गया है।

अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में हिंदी का संवर्धन करने तथा उसे संयुक्त राष्ट्र संघ में एक अधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने के अपने मूल उद्देश्य को लेकर 'विश्व हिंदी सचिवालय' अपने सीमित साधनों के साथ निरंतर प्रयासरत है। न्यूयार्क में 13–15 जुलाई 2007 को आयोजित आठवां 'विश्व हिंदी सम्मेलन' इस दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा कि विश्व भर के हिंदी प्रेमी संयुक्त राष्ट्र संघ के सभागार में एकत्र हुए और हिंदी का सामूहिक शंखनाद विश्व के कोने–कोने तक पहुँचाया। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए 'संयुक्त राष्ट्र संघ' के महासचिव 'श्री बान की मून' ने कहा कि ''संसार के लोगो को एक–दूसरे के निकट लाने के लिए हिंदी समन्वय–सूत्र की तरह काम कर रही है। यह संसार की सभी संस्कृतियों के बीच एक सेतु है।'' निश्चित ही 'श्री बान की मून' को हिंदी के विश्वव्यापी उज्ज्वल भविष्य का आभास हो चुका है और उन्हें हिंदी के तेजी से बढ़ते कदमों की आहट भी सुनाई दे रही है। मॉरीशस में 'विश्व हिंदी सचिवालय' की स्थापना का विचार सबसे पहले मॉरीशस के राष्ट्रपिता और प्रथम प्रधानमंत्री 'सर शिवसागर गुलाम' ने भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी की उपस्थिति में भारत के नागपुर शहर में 10 जनवरी 1975 को आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन में रखा था। उन्होंने कहा था कि हिंदी भारत के लिए राष्ट्रभाषा है लकिन हमारे लिए यह अंतर्राष्ट्रीय भाषा है। आज मॉरीशस और भारत की साझेदारी में 'विश्व हिंदी सचिवालय' मॉरीशस में कार्यरत है। 'विश्व हिंदी सचिवालय' ने हिंदी को विश्वव्यापी बनाने का अपना अधिकारिक अभियान 11 फरवरी 2008 से प्रारंभ किया था। सम्पूर्ण विश्व में चल रही हिंदी की गतिविधियों से हिंदी प्रेमियों को समय–समय पर अवगत कराने के लिए सचिवालय की ओर से त्रैमासिक 'विश्व हिंदी समाचार' का प्रकाशन मार्च 2008 से आरंभ किया गया था। इस पत्र के माध्यम से मॉरीशस, अमेरिका, ब्रिटेन, कनाड़ा, नीदरलैंड, दक्षिण अफ्रिका, सिंगापुर, सिडनी, जमैका, उक्रेन, जापान, हंगरी, संयुक्त अरब अमीरात, कुवैत, ईराक व साऊदी आदि देशों में हिंदी के प्रचार–प्रसार से जुड़ी संस्थाओं द्वारा हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति के लिए किए जा रहे कार्यों की संक्षिप्त जानकारी विश्वव्यापी हिंदी प्रेमियों तक पहुंचाने का प्रयास जारी है।

10 जनवरी, 1975 को 'प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन' का शुभारंभ नागपुर, भारत में हुआ था। अतः इस ऐतिहासिक तिथि को याद रखने के साथ ही पूरी दुनिया में हिंदीमय वातावरण बनाने के लिए प्रतिवर्ष 10 जनवरी का दिन 'विश्व हिंदी दिवस' के रूप में मनाने का निर्णय विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सन् 2006 में लिया गया था। अब हर साल हिंदी प्रेमी 14 सितंबर को भारत में 'हिंदी दिवस' और 10 जनवरी को पूरे विश्व में 'विश्व हिंदी दिवस' मनाने लगे है।

उन्नीसवीं शताब्दी में मॉरीशस, फीजी, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिडाड एंड टोबैगो और दक्षिण अफ्रीका में भारतीय मजदूर खेतों में काम करने गए थे। हिंदी इनके साथ इन देशों में पहुँची फुली–फली। बीसवीं शताब्दी में व्यापार और समृद्ध जीवन के लिए अनेक भारतीय अमेरिका, कनाड़ा, ब्रिटेन आदि देशो में बस गए। इससे भी हिंदी को नया निवास मिला।

विश्व के अनेक देशों के विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षा दी जाती है, जिनमें मॉरीशस, फीजी, हॉलेंड, जर्मनी, अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, ऑस्ट्रेलिया, थाईलैंड, उजबेकिस्तान, तजाकिस्तान, क्रोएशिया, कनाडा, चीन, जापान, रोमानिया, ब्रल्गारिया, रूस, हंगरी, पोलैंड आदि देश प्रमुख है। अकेले अमेरिका के 80 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की सुविधा उपलब्ध है। जिन देशों में हिंदी शिक्षण को औपचारिक शिक्षा व्यवस्था में स्थान नहीं मिला, वहाँ भारतीय समुदाय की स्वंयसेवी संस्थाए हिंदी का अध्यापन करती है।

हिंदी को विश्वभाषा व राष्ट्रसंघ की भाषा बनाने में कठिनाइयां विज्ञान और टेक्नोलॉजी की शब्दावली की है। अभी हमने जो शब्द गढ़े हैं उनमें अस्पष्टता, अस्वाभाविकता और अंग्रेज़ी की छाप है। वे शब्दकोश में तो जगह पा सकते हैं पर बोलचाल में उनका प्रवेश मुश्किल है। टेक्नोलॉजी को जैसे हमने तकनीक जैसे सरल शब्द में

बदला, कुछ ऐसे प्रयोग की जरूरत है। अंग्रेज़ी को थोड़ा बदलकर शब्द गढ़ने की जरूरत नहीं है, अलेक्जेंडर की जगह सिकंदर जैसे शब्द सही विकल्प है। इसमें भारतीय भाषाएं हमारे बहुत काम आएंगी। मराठी ने भी ट्रांसफार्मर के लिए रोहित्र जैसे अच्छे प्रयोग किए हैं। यूरापीय भाषाओं की तुलना में उर्दू, फारसी, तुर्की, अरबी शब्द हमारे ज्यादा नजदीक है। अंग्रेज़ी के प्रचलन में आ चुके शब्दों को अपनाने में भी कोई बुराई नहीं है। हमें शुद्धतावादी दृष्टिकोण छोड़ना होगा। विज्ञान व तकनीकी शब्दावली की दुरुहता दूर होते ही हिंदी अपने आप सर्वमान्य हो जाएगी। जरूरत सिर्फ इतनी है कि हम इसे विज्ञान और वाणिज्य की भाषा बनाने की दिशा में सार्थक काम करें और सोचें कि हम हिंदी सीखने के इच्छुक देशों के लिए किस तरह हिंदी संसाधन स्रोत बन सकते हैं।

सदिच्छाओं व लचर प्रशासनिक व्यवस्था और कमजोर राजनीतिक इच्छा–शक्ति के बावजूद भी अब तक विश्व सम्मेलनों के तमाम पारित प्रस्ताव को अमल करने का प्रयास जारी है। संयुक्त राष्ट्र में अधिकारिक दर्जे की बात है तो उसके लिए गिड़गिड़ाना गरिमापूर्ण नहीं लगता। हिंदी अपने बल पर वह दर्जा देर–सबेर हासिल कर लेगी, इसके संकेत मिलने लगे है। आज हिंदी साहित्यकारों की झोली से निकलकर साहूकारों के कंधों पर सवार हो गई है, हुक्मरानों के दरबार में विराजमान हो गई है। तमाम विसंगतियों के बावजूद वह 'विश्वभाषा' बनने को तैयार है। इसकी दहलीज पर पहुंच चुकी है। आश्चर्य नहीं होगा जब 'योग' की भांति हिंदी भी एक दिन अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में अपना परचम लहराएगी।

संदर्भ

1. अरुण, विनोदबाला. विश्व–क्षितिज पर हिंदी. मिश्र, राजेंद्र प्रसाद. विश्व हिंदी पत्रिका. मॉरीशसः विश्व हिंदी सचिवालय, अंक 2009
2. गोस्वामी, कृष्ण कुमार. विश्व में हिंदी शिक्षण. मिश्र, राजेंद्र प्रसाद. विश्व हिंदी पत्रिका. मॉरीशसः विश्व हिंदी सचिवालय, अंक 2011.
3. चंदोला, अनूप. अमेरिका में हिंदी. केंद्रीय हिंदी निदेशालयः भाषा त्रैमासिक–विश्व हिंदी सम्मेलन, अंक 1975.
4. जैन, महावीर सरन. हिंदी की अंतर्क्षेत्रीय, अंतर्देशीय एवं अंतर्राष्ट्रीय भूमिका. सिंह, रामगोपाल. शोध भारती. अहमदाबादः अखिल भारतीय अनुवाद परिषद, अंक 8–9 अप्रेल–सितम्बर 2000.
5. ज़्बेर्या, निकोलाय. रोमानिया में हिंदी. केंद्रीय हिंदी निदेशालयः भाषा त्रैमासिक–विश्व हिंदी सम्मेलन, अंक 1975.
6. मिश्र, राजेंद्र प्रसाद. और एक प्रयास. मिश्र, राजेंद्र प्रसाद. विश्व हिंदी पत्रिका. मॉरीशसः विश्व हिंदी सचिवालय, अंक 2009.
7. सिंह, भगवान. फीजी में हिंदी. केंद्रीय हिंदी निदेशालयः भाषा त्रैमासिक–विश्व हिंदी सम्मेलन, अंक 1975.